तूं लीजे नीके माएने, तेरे मुख के बोल।
जो साख देवे तुझे आतमा, तो लीजे सिर कौल।। ४३ ।।

हे महामति! जो वाणी तेरे मुख से कही जाए उसके अच्छी तरह से मायने लेना। अगर तेरी आत्मा तुझे साक्षी दे तो अपने किए वायदे पूरे करना।

खसम खड़ा है अंतर, जेती सोहागिन।
तूं पूछ देख दिल अपना, कर कारज दृढ़ मन।। ४४ ।।

धनी अभी मेरे अन्दर विराजमान हैं, पर ब्रह्मसृष्टि से अन्तर है। इस बात की हकीकत अपने दिल से पूछ और दृढ़ता के साथ सबको पहचान कराने का काम कर।

आप खसम अजूं गोप है, आगे होत प्रकास।
उदया सूर छिपे नहीं, गयो तिमर सब नास।। ४५ ।।

स्वयं धनी अभी गुप्त हैं। यह आगे जाहिर हो जाएंगे। सूर्य जब उदय होता है तो कभी छिपता नहीं और सब अज्ञानता दूर हो जाती है, अर्थात् यह तो अखण्ड धाम के धनी का ज्ञान रूपी सूर्य है। कैसे छिपेगा। इससे ही सारी अज्ञानता हटेगी।

॥ प्रकरण ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ २०४ ॥

राग श्री

सत असत पटंतरो, जैसे दिन और रात।
सत सूरज सब देखहीं, जब प्रगट भयो प्रभात।। १ ।।

सत और झूठ का दिन और रात के समान अन्तर है। जब सच्चा ज्ञान मिल जाता है तब समझना चाहिए सवेरा हुआ।

जोलों पिउ परदे मिने, विश्व विगूती तब।
सो परदा अब खोलिया, एक रस होसी अब।। २ ।।

जब तक प्रीतम की पहचान नहीं थी तभी तक दुनियां उलझी थी। अब अज्ञान मिट गया है, इसलिए दुनियां सब एक रास्ते पर आ जाएगी।

जोलों जाहिर ना हुते, तब इत उपज्या क्रोध।
जब प्रगटे तब मिट गया, सब दुनियां को व्रोध।। ३ ।।

जब तक परब्रह्म की पहचान नहीं थी, तब तक क्रोध और अहंकार था। जैसे ही परब्रह्म जाहिर हुए दुनियां का विरोध मिट गया।

ए प्रकास खसम का, सो कैसे कर ढंपाए।
छल बल वल जो उलटे, सो देवे सब उड़ाए।। ४ ।।

यह धनी के ज्ञान का उजाला कैसे ढंपे। यह दुनियां के छल, बल और टेढ़ाई वाले ज्ञान जो माया की तरफ खींच रहे थे, उन सबको उड़ा देगा।

दुनियां टेढ़ी मूल की, सो पेड़ से निकालूं वल।
पिया प्रकास जो खिन में, सीधा करूं मंडल।। ५ ।।

यह दुनियां मोह तत्व से ही टेढ़ी है, इसलिए इसकी टेढ़ाई मोह तत्व से ही उड़ा दूंगा। धनी का ज्ञान एक पल में सारे ब्रह्माण्ड को सीधा कर देगा।

Nijanand App

सत जो ढांप्या ना रहे, उड़ाय दियो अंधेर।
नूर पिया पसरे बिना, क्यों मिटे दुनियां फेर।।६।।

सत का ज्ञान छिपा नहीं रह सकता। इसके सामने दुनियां के सारे झूठे ज्ञान अंधेरे की तरह उड़ जाएंगे। धनी का ज्ञान जब तक नहीं फैलता तब तक दुनियां का जन्म-मरण का चक्कर कैसे मिटेगा?

अब अंधेर कछू ना रह्या, जाहेर हुआ उजास।
तबक चौदे खसम का, प्रगट भया प्रकास।।७।।

अब तारतम वाणी जाहिर हो गई है, इसलिए सब अज्ञानता का अंधेरा समाप्त हो जाएगा। धनी के इस ज्ञान ने चौदह लोकों में उजाला फैलाया।

जोलों तिमर ना उड़े, तोलों सृष्ट न होवे एक।
तिमर तीनों लोक का, उड़ाए दिया उठ देख।।८।।

जब तक यह अज्ञान का अन्धकार नहीं उड़ेगा तब तक संसार के लोग एक रास्ते पर नहीं आऐंगे (एक परब्रह्म के पूजक नहीं बनेंगे)। हे मेरी आत्मा! जागृत बुद्धि से उठके देख, तीनों लोकों का अन्धकार खत्म हो गया।

ए प्रकास है अति बड़ा, सो राखत हों अजूं गोप।
जिन कोई ना सहे सके, ताथें हलके करूं उद्दोत।।९।।

जागृत बुद्धि का ज्ञान बहुत भारी है, इसलिए इसे छिपाकर रखता हूं और धीरे-धीरे जाहिर करता हूं, ताकि सभी लोक इसको ग्रहण कर सकें।

ए जो सब्द खसम के, जिन तुम समझो और।
आद करके अबलों, किन कह्या ना पिया ठौर।।१०।।

यह जागृत बुद्धि का ज्ञान धनी की वाणी है, इसको और किसी का न समझ लेना। जब से ब्रह्माण्ड बना है तब से आज तक किसी ने भी धनी के घर का ठिकाना नहीं बताया।

ए अकथ केहेनी खसम की, काहूं ना कथियल कोए।
जो किनका कथियल कहूं, तो पिया वतन सुध क्यों होए।।११।।

यह धनी के कहे हुए वचन मैं कहती हूं, जिसे आज तक किसी ने कभी नहीं कहा। अगर दूसरे ज्ञान को कहने लगूंगी तो घर की और धनी की सुध कैसे होगी?

केतेक ठौरों सोहागनी, तिन सब ठौरों उजास।
पर जब इत थें जोत पसरी, तब ओ ले उठसी प्रकास।।१२।।

जहां-जहां पर ब्रह्मसृष्टियां हैं उन सब जगह यह ज्ञान है। यहां से ज्ञान का प्रसार होगा, तब सब ब्रह्मसृष्टियां जागृत होकर उठ बैठेंगी।

कोई दिन राखत हों गुझ, सो भी सैयों के सुख काज।
जब सैयां सबे मिलीं, तब रहे ना पकरयो अवाज।।१३।।

कुछ दिन तक मैं जागृत ज्ञान को छिपा कर रखती हूं वह भी ब्रह्मसृष्टियों के सुख के लिए (ताकि उनकी इच्छाएं पूरी हो जाएं), जब ब्रह्मसृष्टियां एक साथ मिलेंगी तब जागृत बुद्धि की पुकार को रोका नहीं जा सकेगा।

Nijanand App

क्यों रहे प्रकास पकरयो, एह जोत अति जोर।
जब सब उजाला इत आईया, तब गई रैन भयो भोर।। १४ ।।

तारतम वाणी का उजाला रोका नहीं जा सकेगा। इसकी रोशनी का तेज अधिक है। जब पूर्ण रूप से वाणी का उजाला हो जाएगा तब रात्रि (अज्ञानता का अन्धकार) मिटकर प्रभात हो जाएगा।

मैं अबला अरधांग हों, पिउ की प्यारी नार।
सब जगाऊं सोहागनी, तो मुझे होए करार।। १५ ।।

महामति कहती हैं कि मैं अपने पिया की अबला प्यारी अर्धांगिनी हूं। मैं जब अपने सुन्दरसाथ को जगा लूंगी तभी मुझे आराम मिलेगा।

सैयों को वतन देखावने, उलसत मेरे अंग।
करने बात खसम की, मावत नहीं उमंग।। १६ ।।

सुन्दरसाथ को परमधाम की पहचान कराने के लिए मेरे मन में बहुत उमंग है और उनको धनी की बातें बताने की भी बड़ी चाहना है।

नए नए रंग सोहागनी, आवत हैं सिरदार।
खेल जो होसी जागनी, नाहीं इन सुख को पार।। १७ ।।

अब घर और धनी की पहचान लेकर सिरदार ब्रह्मसृष्टि तरह-तरह के आनन्द में विभोर होकर आएगी और तब जागृत होकर घर का सुख मिलेगा। वह इतना अधिक होगा जिसका शुमार नहीं होगा।

जो पिउ प्यारी आवत, ताको गुझ राखों उजास।
बाट देखों और सैयन की, सब मिल होसी विलास।। १८ ।।

धनीजी की जो भी प्यारी ब्रह्मसृष्टि आएगी, उसको यह धनी का छिपा ज्ञान समझाऊंगी। दूसरी ब्रह्मसृष्टि के आने का रास्ता देखूंगी। सब एक साथ मिलकर आनन्द करेंगे।

ए उजास इन भांत का, जो कबूं निकसी किरन।
तो पसरसी एक पल में, चारों तरफों सब धरन।। १९ ।।

यह ज्ञान का उजाला इस तरह का है कि इसकी एक छोटी-सी किरण भी बाहर निकली तो एक पल में चौदह लोकों में फैल जाएगी।

बात बड़ी इन खसम की, सो क्यों कर ढापूं अब।
सुख लेने को या समें, पीछे दुनियां मिलसी सब।। २० ।।

मेरे धनी की साहिबी बहुत बड़ी है, उसे कैसे छिपाऊं? सुख लेने का समय तो अभी है। पीछे तो सारी दुनियां आ जाएगी।

ए प्रकास जो पिउ का, टाले अंदर का फेर।
याही सब्द के सोर से, उड़ जासी सब अंधेर।। २१ ।।

धनी की यह तारतम वाणी अन्दर के सारे संशय मिटा देती है। इस वाणी के तेज से (प्रकाश से) सारी दुनियां का अंधेरा मिट जाएगा।

Nijanand App

और बेर अब कछू नहीं, गयो तिमर सब नास।
होसी सब में आनन्द, चौदे तबक प्रकास।। २२ ।।

अब और कोई देरी नहीं है, अन्धकार तो मिट गया है। चौदह लोकों में यह ज्ञान फैल जाएगा तो सब की अज्ञानता हट जाएगी और सबको आनन्द का सुख मिलेगा।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। २२६ ।।

सोहागनियों के लछन

पार वतन जो सोहागनी, ताकी नेक कहूं पेहेचान।
जो कदी भूली वतन, तो भी नजर तहां निदान।। १ ।।

अक्षर के पार रहने वाली जो ब्रह्मसृष्टियां हैं (वह खेल देखने यहां आई हैं), उनकी थोड़ी सी पहचान कराती हूं। संसार में आकर भले वह अपने घर परमधाम को भूल गई हैं फिर भी उनकी सुरता परमधाम में ही रहती है।

आसिक प्यारी पिउ की, कोई प्रेम कहो विरहिन।
ताए कोई दरदन कहो, ए लछन सोहागिन।। २ ।।

यह अपने पिया की प्यारी विरहिणी हैं। इनको ही केवल उस परब्रह्म प्रीतम से मिलने की तड़प है। इनसे ही सुहागिन की पहचान होती है।

रूह खसम की क्यों रहे, आप अपने अंग बिन।
पर पकरी पिया ने अंतर, नातो रहे न तन।। ३ ।।

परब्रह्म की यह अंगनाएं अपने धनी के बिना कैसे रह सकती हैं? यह उनके अंग हैं। धनी ने ही अन्दर से अपनी शक्ति से ही यहां रोक रखा है। नहीं तो इनकी पहचान होने के बाद अपने तनों को तुरन्त छोड़ देतीं।

ऊपर काहूं न देखावहीं, जो दम न ले सके खिन।
सो प्यारी जाने या पिया, या विध अनेक लछन।। ४ ।।

ऐसी व्याकुल ब्रह्मसृष्टियां ऊपर का दिखावा नहीं करतीं। एक पल भी विरह सहन नहीं कर सकतीं। इनके विरह को धनी जानते हैं या वह जानती हैं। इस तरह से ब्रह्मसृष्टियों की पहचान के कई लक्षण हैं।

आकीन न छूटे सोहागनी, जो परे अनेक विघन।
प्यारी पिउ के कारने, जीव को न करे जतन।। ५ ।।

कितने भी कष्ट क्यों न आएं सुहागिनियों का यकीन नहीं छूट सकता। वह अपने पिया के वास्ते अपने जीव तक की भी कुर्बानी करने में पीछे नहीं हटतीं।

रेहेवे निरगुन होए के, और आहार भी निरगुन।
साफ दिल सोहागनी, कबहूं न दुखावे किन।। ६ ।।

इनका पहनावा और खाना-पीना साधारण होता है। इनके दिल निर्मल होते हैं। यह कभी भी किसी को दुखाती नहीं हैं।

ओ खोजे अपने आप को, और खोजे अपनो घर।
और खोजे अपने खसम को, और खोजे दिन आखिर।। ७ ।।

यह अपने आप की, अपने घर की और अपने प्रीतम की और आखिर के दिन की खोज में तब तक लगी रहती हैं जब तक उनको प्राप्त नहीं कर लेतीं।

Nijanand App